

विचार बिन्दु

खुद के लिये जीने वाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता पर जब आप दूसरों के लिये जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिये जीते हैं। -श्री परमहंस योगानन्द

डिजिटल भारत या डिजिटल विभाजन की नई दीवार?

हमारे सामने एक नया भारत उभर रहा है। बहुत कुछ बदल रहा है। कुछ बदलाव हम महसूस करते हैं, कुछ बदलाव हमें बताए और महसूस कराए जाते हैं। यह अस्वाभाविक भी नहीं है। जब कोई काम किया जाता है तो करने वाला उसका प्रचार भी करता है, उसके लिए प्रेम भी लेता है। यह मानव स्वभाव है। इधर हमें जो बड़े बदलाव बताए जाते हैं, और जिन्हें हम खुद महसूस भी करते हैं उनमें एक बड़ा बदलाव यह है कि अपना देश अब 'डिजिटल' हो गया है। 'डिजिटल इंडिया' की खूब चर्चा होती है, और हमारे सामने उपलब्धियों की एक लंबी सूची उभर आती है। हम खुद देखते हैं और अगर न भी देखें तो हमें दिखाया जाता है कि अब चाय वाले से लेकर चाट वाले तक, यहां तक कि भिखारी भी, न्यूअप कोड से भुगतान ले रहे हैं, बैंक जेब में समा गया है; रेलवे टिकट, बिजली का बिल, टैक्स भुगतान, अस्पताल का पंजीकरण-सब कुछ मोबाइल की स्क्रीन पर बस एक क्लिक की दूरी पर उपलब्ध है। यह सब यथार्थ है और निस्संदेह उल्लेखनीय और सराहनीय भी है। खुद में महसूस करता हूँ कि डिजिटलीकरण ने मेरा जीवन बहुत आसान कर दिया है। निस्संदेह यह आज के भारत की सफलता की एक चमकीली कथा है। लेकिन हर सफलता की कहानी का एक ऐसा अध्याय भी होता है जो उत्सवधर्मिता के शोर में दब जाता है। डिजिटल भारत की कहानी में वह अध्याय बुजुर्ग नागरिकों का है।

तकनीक का उद्देश्य मनुष्य का जीवन आसान बनाना था। जो उसे बरतने में सक्षम थे, उनका जीवन उसने सुगम बनाया था। लेकिन अति उत्साह में हमारे यहीं धीरे-धीरे सुविधा और अनिवार्यता का अंतर मिटता जा रहा है। आप बैंक जाइए तो कर्मचारी मुस्कुराकर सलाह देता है-“सर, यह काम ऐप से हो जाएगा।” रेलवे की खिड़की पर जाइए तो बताया जाता है कि ऑनलाइन टिकट लेना अधिक सुविधाजनक है। किसी अस्पताल में अपॉइंटमेंट चाहिए तो वेबसाइट या ऐप का रास्ता दिखा दिया जाता है। मानो यह मान लिया गया है कि देश का हर नागरिक स्मार्टफोन, इंटरनेट और डिजिटल प्रक्रियाओं का उतना ही अभ्यस्त है जितना उसे बनाने और सहजता से बरतने वाली पीढ़ी है।

यहीं से समस्या शुरू होती है। भारत में करोड़ों ऐसे वरिष्ठ नागरिक हैं जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा उस दुनिया में बिताया है जहाँ दस्ताखत पहचान का प्रमाण थे, पासबुक बैंकिंग का आधार था और किसी भी काम के लिए एक जीवित मनुष्य से बात करना संभव था। अब उन्हें एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करने के लिए बाध्य किया जा रहा है जहाँ पहचान ओटीपी से होती है, भरोसा पासवर्ड पर टिका है और सहायता का पहला स्रोत कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि एक चैटबॉट होता है। सारा कारोबार एक दबाओ, दो दबाओ से आगे बढ़ता है।

वृद्धावस्था स्वयं में कोई समस्या नहीं है। यह तो एक स्वाभाविक परिणति है। जो जन्म लेता है वह वृद्ध भी होता है। समस्या तब पैदा होती है जब समाज अपनी व्यवस्थाएँ इस तरह निर्मित करते हैं कि उस एक प्रकार की अक्षमता में बदल जाती है। आज बुजुर्गों के लिए मोबाइल फोन केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि परीक्षा का एक डराने वाला प्रश्न-पत्र बन गया है। हर कुछ दिनों में नया अपडेट, नया इंटरफ़ेस, नई सुरक्षा प्रक्रिया और नया सत्यापन जिस व्यक्ति ने जीवन भर कठिन प्रशासनिक और सामाजिक जिम्मेदारियों निभाई हैं, वह भी एक छोट्टे-से संदेश-पासवर्ड इनकरेंटेड के सामने असहाय महसूस कर सकता है। और दुख की बात यह कि उसकी इस व्यथा को कोई समझना भी नहीं चाहता।

तकनीक विशेषज्ञ अक्सर यह मान लेते हैं कि जो चीज उन्हें सहज लगती है, वह सभी को सहज लगेगी। लेकिन तकनीक का सबसे बड़ा भ्रम यही है। एक युवा के लिए जो प्रक्रिया तीस सेकंड में पूरी हो जाती है, वहीं किसी बुजुर्ग के लिए तनाव, भय, असुरक्षा, आतंक, असहायता, दयनीयता और निर्भरता का कारण बन सकती है। समस्या केवल तकनीकी नहीं है; भाषा की भी है। सोच कर देखें कि 'ऑथेंटिकेट', 'वेरिफाई', 'रीसेट', 'अपडेट', 'प्रोसेस' और 'सबमिट' जैसे शब्द उन लोगों के लिए कितने आत्मीय हैं जिनकी शिक्षा और जीवनानुभव किसी दूसरी भाषायी दुनिया में विकसित हुए हैं? भारत में तकनीक सामान्यतः अंग्रेजी केंद्रित है और जिस पीढ़ी की में चिंता कर रहा हूँ, उसका एक बड़ा हिस्सा अपनी पूरी जिंदगी अंग्रेजी से इतर किसी भाषा में अपना काम करता रहा है। अब उस के इस मुकाम पर आकर उनके लिए एक नई भाषा सीखना, और उसमें तकनीक को बरतना कितना मुश्किल होगा, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। इस पूरी प्रक्रिया का सबसे दुखद पक्ष आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ है। एक समय या जब परिवार के निर्णयों का केंद्र घर के बुजुर्ग हुआ करते थे। आज कई बार उन्हें अपने ही बैंक खाते का विवरण देखने, बिजली का बिल भरने या रेल टिकट बुक करने के लिए बेटे, पोते, बेटे-पोती या पड़ोसी की सहायता लेनी पड़ती है। सहायता माँगना बुरा नहीं है; लेकिन हर छोटे-बड़े काम के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाना मनुष्य के आत्मविश्वास का धीरे-धीरे क्षरण करता है।

डिजिटल क्रांति ने एक और विडंबना पैदा की है। पहले नागरिक सरकारी दफ्तरों की कतारों में परेशान होते थे। अब कतारें कम हो गई हैं, लेकिन उनकी जगह ओटीपी, कैप्चा, यूजर आईडी और पासवर्ड ने ले ली है। तकनीक को धड़ल्ले से बरतने वाला मैं भी बहुत दफा कैप्चा के आगे पराजित हो जाता हूँ। पहले खिड़की के उस पार बैठा बाबू कभी-कभी झुंझला कर कुछ कह देता था; अब उसकी जगह एक निर्जीव स्क्रीन ने ले ली है, जो गलती होने पर केवल इतना कहती है-“एरर, ट्राय अगेन।”

विडंबना यह है कि जिस देश में 'सबका साथ, सबका विकास' और 'समावेशी विकास' को बाँटें तोते हैं, वहीं डिजिटल समावेशन पर अपेक्षित गंभीरता से चर्चा ही नहीं होती है। किसी सेवा को ऑनलाइन उपलब्ध करा देना और उसे सबके लिए सुलभ बना देना दो अलग-अलग बातें हैं। यदि किसी नागरिक को किसी आवश्यक सेवा का लाभ उठाने के लिए स्मार्टफोन, इंटरनेट, अंग्रेजी की समझ और तकनीकी दक्षता अनिवार्य रूप से चाहिए, और इसका कोई विकल्प उपलब्ध न हो, तो हमें यह पृष्ठना चाहिए कि क्या वह व्यवस्था वास्तव में समावेशी है? लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि मैं तकनीक का विरोधी हूँ; मैं स्पष्ट कहता हूँ कि रेलगाड़ी से उतरकर बैलगाड़ी पर लौट जाने का कोई औचित्य नहीं है। प्रश्न तकनीक के उपयोग का नहीं, उसकी मानवीयता का है। क्या बैंक शाखाओं में वरिष्ठ नागरिक सहायता टेस्क नहीं हो सकती? क्या आवश्यक सेवाओं के लिए ऑनलाइन विकल्प सुरक्षित नहीं रखे जा सकते? क्या ऐप और वेबसाइटों को अधिक सरल, अधिक सहज भारतीय भाषाओं में और अधिक वरिष्ठ-अनुकूल नहीं बनाया जा सकता? क्या डिजिटल साक्षरता अभियान बुजुर्गों के लिए भी नहीं चलाए जाने चाहिए?

किसी भी समाज की प्रगति का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं किया जाता कि वह कितना तेज़ दौड़ रहा है। उससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है जो किसी कारणवश उतनी तेज़ी से नहीं दौड़ सकते हैं। डिजिटल भारत का स्वप्न निश्चय ही स्वागत योग्य है। किंतु यदि उस स्वप्न के रास्ते में हमारे वरिष्ठ नागरिक स्वयं को असहाय, अपेक्षित और अप्रासंगिक महसूस करने लगें, तो यह गम्भीर आत्ममंथन का विषय है। तकनीक तब तक सत्यता की सहयोगी है जब तक वह मनुष्य को सशक्त बनाती है। जिस दिन वह मनुष्य को उसकी ही व्यवस्था में पराया महसूस कराने लगे, उस दिन हमें रुककर यह पृष्ठना चाहिए कि हम डिजिटल भारत बना रहे हैं या अनजाने में डिजिटल विभाजन की एक नई दीवार खड़ी कर रहे हैं!

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राशिफल

सोमवार 8 जून, 2026

द्वितीय ज्येष्ठ मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2083, सतभिषा नक्षत्र प्रातः 9:10 तक, विशुक्ल योग प्रातः 9:28 तक, बालव कर्ण दिन 3:24 तक, चन्द्रमा रात्रि 3:37 से मीन राशि में संचार करेगा।

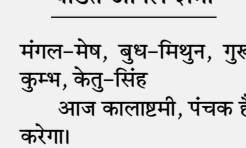
ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मेघ, बुध-मिथुन, गुरु-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज कालाष्टमी, पंचक है। आज शुक्र कर्क में सायं 5:43 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौपडिया: अमृत सूर्योदय से 7:19 तक, शुभ 9:01 से 10:43 तक, चर 2:08 से 3:50 तक, लाभ अमृत 3:50 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:15



पंडित अनिल शर्मा



पंडित अनिल शर्मा

मेघ	वृष	वृश्चिक	धनु
आज आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यवसायिक यात्रा संभव है।	व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटकें हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य जित्त सफल मिलेंगी। व्यवसायिक आय में वृद्धि होगी।	घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यवसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।	परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनने।

तुला	कर्क	सिंह	कन्या
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगे।	चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्ति परेशानियों अभी अथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। वानर कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।	परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग हो सकता है। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यवसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

बढ़ती उम्र और घटती संवेदनात्मक प्रतिवर्ती क्रियाएं



वीर बहादुर सिंह

यह लेख मूलतः शरीर विज्ञान एवं मनोविज्ञान की परिधि में आता है। लेखक ने यह विवरण एक वरिष्ठ जनों की यू 3 ए की उदयपुर सभा में अंग्रेजी में शीर्षक "डिभिनिशिंग रेफ्लेक्सस विद एडवॉसिंग एज" से दिया था। अतिरिक्त इसके, कुछ समय पूर्व जैन संतशिरोमणि आचार्य महाप्रज्ञ जी को भी उनके उदयपुर प्रवास के अवसर पर एक अन्य लेख के साथ इसे दिया था। उन दो लेखों में से आचार्य जी ने एक उस समय प्रकाशित एक स्मृति-कार्ड में अंग्रेजी में छपाई दिया था। लेखक ने आचार्य जी से पांच बार भेंट कर कई शरीर सम्बन्धी आयामों पर वैज्ञानिक सार्थक चर्चा की थी जिनके बारे में उन्होंने अपने कतिपय तब भिन्न भिन्न प्रवचनों में मेरा नाम लेकर उल्लेख भी किया था। पाठकों को यहाँ बात दूँ कि आचार्य महाप्रज्ञ जी उच्च कोटि के संत

शरीर जब प्रतिवर्ती क्रिया देने में विलम्ब करने लगे तो आदमी समझने लगता है कि अब बुढ़ापा आने लगा है और ऐसी ही भिन्न भिन्न दशाओं के प्रकट होते आदमी बुढ़ापा और उसके दश से

तो निःसंदेह थे ही, उनकी शरीर विज्ञान और नलिकाविहीन अंतःस्त्रावी ग्रंथियों और उनसे खावित होमोनस की जानकारी पर अच्छी पकड़ थी। उनकी शैक्षणिक योग्यता जानने की तो लेखक की कभी हिम्मत नहीं हुई। बहराल यह लेख चूँकि अंग्रेजी भाषा में लिखा गया था, सोचा क्यों न अब इसे हिंदी भाषा में परिवर्तित कर अधिक लोगों को जानकारी के लिए अखबार में छपा दूँ।

संवेदनात्मक प्रतिवर्ती क्रियाएं क्या होती हैं पाठक यह जान लें। आपके पैर में कौटा लगा अथवा कोई कंकड़, कौटा या अन्य कुछ चलते समय चुचा तो बिना क्षण गवाए आपको घेर तुरंत ही संज्ञान लेकर कुछ उपाय करता है, टांग में मक्खर आदि के काटने पर आपका हाथ तुरंत ही उस स्थान पर हल्का सा थपड़ मार देता है इसी प्रकार कहीं सुई, ऑलंपिग या कोई अन्य नुकली वस्तु चुभने पर आपको प्रतिक्रिया तुरंत होती है। आँख में कुछ गिरने पर तत्काल स्वतः आँख बंद कर देते हैं और आप मलनें लगते हैं। इन क्रियाओं के फलस्वरूप शरीर जो प्रतिक्रिया करने देते हैं वहीं सब रिपलेक्स एक्शन या प्रतिवर्ती क्रियाएं कहलाती हैं।

शरीर जब प्रतिवर्ती क्रिया देने में विलम्ब करने लगे तो आदमी समझने लगता है कि अब बुढ़ापा आने लगा है और ऐसी ही भिन्न भिन्न दशाओं के प्रकट होते आदमी बुढ़ापा और उसके दश से

डरने लगता है। क्योंकि बाल्यावस्था और जवानी में तो ऐसा कुछ होता नहीं था। इस तरह का भाव यदि किसी में पर कर जाय और उसका समुचित निदान न किया जाय तो परिणीति असक्षमता, नर्वस डिसऑर्डर, काम करने की लगन में कमी और फिर सकारात्मक मनोवृत्ति में ह्रास के साथ जटिल डेमेंश्या, डिप्रेशन और अल्झीमर रोग बन जाते हैं। इन सबसे बचने के लिए उचित व्यवस्था और समुचित उपाय करना वांछनीय है।

इस तरह का बदलाव चूँकि बहुत धीमी गति से होता है। फिर भी पोषण में कमी, किसी अन्य वैरिंटिंग बीमारी (मांस पेशियों में क्षरण) का होना और मानसिक दबाव ऐसी दशाओं को और गति दे देती है। वैसे तो बुढ़ापा शरीर की एक सामान्य क्रिया है। फिर भी चूँकि इसका अंत मृत्यु पर होता है जो अवश्यम्भावी है मनुष्य उदता है। जन्म के समय ही मृत्यु की घड़ी भी चल पड़ती है। जन्म और मृत्यु की अवधि काल में व्यक्ति अधिक से अधिक सकारात्मक सोच के साथ अच्छे व् सकारात्मक कार्यों में व्यस्त रहे तो उसे शार्तिक व्याधियाँ कम व्याप्त हैं और बुढ़ापा भी धीमी गति से घटित होता है। साथ ही प्रतिवर्ती क्रियाओं के बढ़ने की गति बहुत धीमी या नगण्य ही रहती है।

बुढ़ापा की समस्या के चार पहलू हैं:—1. दैहिक आधारित या जैविक 2. मनोवृत्ति पर 3. सामाजिकमूलक और

4. सांस्कृतिक। वैज्ञानिक बुढ़ापा को केवल एक शुद्ध दैहिकी क्रिया मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार अनेक मानसिक, मनोवृत्तिमूलक क्रियाएं धीमी पड़ जाती हैं। लेकिन साथ ही कुछ अंतस्त्रावी ग्रंथियों के स्त्राव-होमोनस, किण्वक और न्यूरोस की कम सघनता और सक्रियता से मस्कुलो नर्वस क्रियाएं मंद पड़ जाती हैं। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि बुढ़ापा की प्रवृत्ति में पूर्वाग्रह और अनभिध्मता दोनों ही मिथक वैज्ञानिक ज्ञान की प्रधानता की साधारणतः अभाव कर देते हैं। अब संक्षेप में वे कारक जो बुढ़ापा में कठिनाइयाँ बढ़ाते हैं और प्रतिवर्ती क्रियाओं में ह्रास करते हैं, वे हैं

- अकेलापन और सामाजिक पृथक्करण, गरीबी के साथ-साथ अन्य किसी वित्तीय स्रोत का भी न होना, शारीरिक अक्षमता, हाइजीन और सफाई की कमी, कार्य संलग्नता में कमी और स्वास्थ्य मुख्य मानसिक तनाव मुख्य कारक हैं। इसलिए वरिष्ठजनों को समय रहते स्वयं किसी परपोषक कार्य से जुड़ जाना चाहिए।

धार्मिक आधारित या जैविक भाग लेने से भी सकारात्मकता बढ़ती है और तनाव में कमी आती है। अकेले होने पर पेड़-पौधे लगाने में रुचि रखने से भी तनाव तो कम होता है कि कुछ शारीरिक श्रम होने से सक्रियता भी बनी रहती है। आखिर में लेख को विराम देते हुए यह मान में बिदा लीजिये कि प्रतिवर्ती क्रियाएं

मष्चित में उपजती हैं इसलिए उनका प्रतिकारक वहाँ पर पैदा होना जरूरी है। इसके लिए दोनों शारीरिक कार्य और मष्चित कार्य सम्पादित करते रहना आवश्यक है।

ध्यान, प्रेक्षा ध्यान और आँटो सजेशन कि मैं ठीक हूँ या मेरी व्याधि कम हो रही है शारीरिक व्यधियों को शीघ्र ही भर देते हैं। क्योंकि ऐसी क्रियाओं से पिटुइटरी, पीनियल, थाइरोइड पारा थाइरोइड की सक्रियता में संतुलन बना रहता है जिससे सभी चयापचय क्रियाएं और प्रतिरोधी क्रियाओं का लाभ शरीर को मिलता रहता है। अपने से कम आयु और तरण युवा लोगों की संगत से भी मन एकाग्र होता है। उनकों की मरम्मत के लिए पौष्टिक आहार लेते रहना जरूरी होता है जिसमें हरे साग-सब्जी और रंगीन फलों का भी यदा कदा भक्षण बहुत लाभ करता है। अंत में वे सभी उपाय करने चाहिए जिससे व्यवस्था और स्वास्थ्य ठीक बना रहे और तनाव कम से कम रहे अथवा बिलकुल नहीं रहे। उन सभी कार्यों में संलग्नता हो जिनसे मन और विश्वास रखती हैं, जिनसे मन और शरीर की सभी मुख्य ग्रंथियाँ सक्रीय रहकर अपने स्त्रावी से शरीर को लाभ पहुंचाती हैं।

-प्रो. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं खाद्य विज्ञ,
महाराणा प्रताप कृषि एवं
प्रौद्योगिकी विवि., उदयपुर।

सनातन धर्म पर हेट स्पीच का इतिहास



सूर्य प्रताप सिंह राजावत

भारत में सनातन धर्म पर हमला एक आम बात बन गई है। यह दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जहाँ बहुसंख्यक धर्म को आलोचना इस हद तक की जाती है कि बोले गए शब्द हेट स्पीच (घृणास्पद भाषण) के मूल तत्वों को पूरा करते हैं। हेट स्पीच में ऐसा भाषण शामिल होता है जिससे किसी विशेष समुदाय को आस्थाओं, रीति-रिवाजों, पूजा-पद्धतियों आदि का अनादर, शत्रुता या अपमान होता है। इस विषय के लिए देश के उन कानूनों को समझना जरूरी है जो भारत में हेट स्पीच से निपटते हैं। यह CrPC की धारा 153(ए), 298, 505(1) का संदर्भ देता है; और अब भारतीय न्याय संहिता के तहत धारा 196, 197, 299, 302, 353 के अंतर्गत आता है। ये धाराएँ उन स्थितियों या आचरण से निपटती हैं जिनमें भारत में कानून-व्यवस्था को बिगाड़ने और हिंसा भड़काने की क्षमता होती है। यदि इसी तरह के शब्द गैर-बहुसंख्यक समुदायों के खिलाफ बोले जाते, तो उसका परिणाम क्या होता, यह सभी को पतली-भांति पता है।

चिंता का विषय यह है कि तमिलनाडु के मंत्री उदयगण्डी स्टालिन का हेट स्पीच के मामले में दुराचरण का एक इतिहास रहा है; यहाँ तक कि मद्रास उच्च न्यायालय को भी इस मंत्री के वर्ष 2023 के हेट स्पीच के मामले से निपटना पड़ा था। उदयगण्डी स्टालिन ने 2023 में एक बैठक को संबोधित करते हुए कहा था, "कुछ चीजों का विरोध नहीं किया जा सकता, उन्हें पूरी तरह से मिटा देना चाहिए। हम डैंगू, मच्छरों, मलेरिया या कोरोना का विरोध नहीं कर सकते, हमें उन्हें पूरी तरह से खत्म करना होता है। ठीक इसी तरह, हमें सनातन (सनातन धर्म) का विरोध करने के बजाय, उसे पूरी तरह से मिटा देना चाहिए।" हेट स्पीच (घृणापूर्ण भाषण) शब्द की बारीकियों को समझने के लिए यह फ़ैसला पढ़ना बहुत जरूरी है। हाई कोर्ट ने अखिनी उपाध्याय मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए निर्देशों का जिक्र किया, जिसमें राज्य के अधिकारियों पर यह जिम्मेदारी डाली गई है कि वे हेट स्पीच फैलाने वाले लोगों के खिलाफ अपनी मर्जी से (suo motu) आपराधिक कार्रवाई शुरू करें। हाई कोर्ट ने अपनी सख्त दिशानिर्देशों को इन निर्देशों के साथ समाप्त किया कि जो लोग हेट स्पीच के लिए जिम्मेदार हैं, वे आजादी से घूम रहे हैं, जबकि जो लोग इसका जवाब दे रहे हैं, उन्हें आपराधिक कार्रवाई के ज़रिए परेशान किया जा रहा है। यह तमिलनाडू राज्य में क्रान्ती लाने वाले पक्षी एजेंसियों द्वारा अपने फ़र्ज से मुँह मोड़ने का मामला है।

सनातन धर्म के खिलाफ हेट स्पीच का एक लंबा इतिहास रहा है, जो विलियम आर्चर को दिए गए एक करारों के बीच की याद दिलाता है; आर्चर ने स्पष्ट के दायरे में, विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए, उस परम सत्ता की ही एक अभिव्यक्ति मात्र है-इस संदर्भ में, धर्मपथ की दिशा तय करने में अवतार की भूमिका ही सबसे सार्थक निष्कर्ष प्रतीत होती है। अतः, सनातन धर्म जिस तरह से दिव्य सत्ता को-परम सत्ता, वैश्विक चेतना और व्यक्तिगत चेतना-इन तीनों आयामों में देखाता है, उस दिव्यकोण को आलोचक समझ नहीं पाते; और इसकी मुख्य वजह है भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता की उनकी अमूर्त समझ।



रोहित कुमार जैन

जयपुर शहर में नो पार्किंग में खड़े वाहनो को फ्रीन के माध्यम से उठाकर ले जाने की व्यवस्था कोई नहीं नहीं है। यह व्यवस्था पूर्व की सरकारों के समय से ही चली आ रही है। लेकिन

कामले से निपटना पड़ा था। उदयगण्डी स्टालिन ने 2023 में एक बैठक को संबोधित करते हुए कहा था, "कुछ चीजों का विरोध नहीं किया जा सकता, उन्हें पूरी तरह से मिटा देना चाहिए। हम डैंगू, मच्छरों, मलेरिया या कोरोना का विरोध नहीं कर सकते, हमें उन्हें पूरी तरह से खत्म करना होता है। ठीक इसी तरह, हमें सनातन (सनातन धर्म) का विरोध करने के बजाय, उसे पूरी तरह से मिटा देना चाहिए।" हेट स्पीच (घृणापूर्ण भाषण) शब्द की बारीकियों को समझने के लिए यह फ़ैसला पढ़ना बहुत जरूरी है। हाई कोर्ट ने अखिनी उपाध्याय मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए निर्देशों का जिक्र किया, जिसमें राज्य के अधिकारियों पर यह जिम्मेदारी डाली गई है कि वे हेट स्पीच फैलाने वाले लोगों के खिलाफ अपनी मर्जी से (suo motu) आपराधिक कार्रवाई शुरू करें। हाई कोर्ट ने अपनी सख्त दिशानिर्देशों को इन निर्देशों के साथ समाप्त किया कि जो लोग हेट स्पीच के लिए जिम्मेदार हैं, वे आजादी से घूम रहे हैं, जबकि जो लोग इसका जवाब दे रहे हैं, उन्हें आपराधिक कार्रवाई के ज़रिए परेशान किया जा रहा है। यह तमिलनाडू राज्य में क्रान्ती लाने वाले पक्षी एजेंसियों द्वारा अपने फ़र्ज से मुँह मोड़ने का मामला है।

सनातन धर्म के खिलाफ हेट स्पीच का एक लंबा इतिहास रहा है, जो विलियम आर्चर को दिए गए एक करारों के बीच की याद दिलाता है; आर्चर ने स्पष्ट के दायरे में, विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए, उस परम सत्ता की ही एक अभिव्यक्ति मात्र है-इस संदर्भ में, धर्मपथ की दिशा तय करने में अवतार की भूमिका ही सबसे सार्थक निष्कर्ष प्रतीत होती है। अतः, सनातन धर्म जिस तरह से दिव्य सत्ता को-परम सत्ता, वैश्विक चेतना और व्यक्तिगत चेतना-इन तीनों आयामों में देखाता है, उस दिव्यकोण को आलोचक समझ नहीं पाते; और इसकी मुख्य वजह है भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता की उनकी अमूर्त समझ।

सनातन धर्म के खिलाफ हेट स्पीच का एक लंबा इतिहास रहा है, जो विलियम आर्चर को दिए गए एक करारों के बीच की याद दिलाता है; आर्चर ने स्पष्ट के दायरे में, विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए, उस परम सत्ता की ही एक अभिव्यक्ति मात्र है-इस संदर्भ में, धर्मपथ की दिशा तय करने में अवतार की भूमिका ही सबसे सार्थक निष्कर्ष प्रतीत होती है। अतः, सनातन धर्म जिस तरह से दिव्य सत्ता को-परम सत्ता, वैश्विक चेतना और व्यक्तिगत चेतना-इन तीनों आयामों में देखाता है, उस दिव्यकोण को आलोचक समझ नहीं पाते; और इसकी मुख्य वजह है भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता की उनकी अमूर्त समझ।

सनातन धर्म के खिलाफ हेट स्पीच का एक लंबा इतिहास रहा है, जो विलियम आर्चर को दिए गए एक करारों के बीच की याद दिलाता है; आर्चर ने स्पष्ट के दायरे में, विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए, उस परम सत्ता की ही एक अभिव्यक्ति मात्र है-इस संदर्भ में, धर्मपथ की दिशा तय करने में अवतार की भूमिका ही सबसे सार्थक निष्कर्ष प्रतीत होती है। अतः, सनातन धर्म जिस तरह से दिव्य सत्ता को-परम सत्ता, वैश्विक चेतना और व्यक्तिगत चेतना-इन तीनों आयामों में देखाता है, उस दिव्यकोण को आलोचक समझ नहीं पाते; और इसकी मुख्य वजह है भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता की उनकी अमूर्त समझ।

सनातन धर्म के खिलाफ हेट स्पीच का एक लंबा इतिहास रहा है, जो विलियम आर्चर को दिए गए एक करारों के बीच की याद दिलाता है; आर्चर ने स्पष्ट के दायरे में, विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए, उस परम सत्ता की ही एक अभिव्यक्ति मात्र है-इस संदर्भ में, धर्मपथ की दिशा तय करने में अवतार की भूमिका ही सबसे सार्थक निष्कर्ष प्रतीत होती है। अतः, सनातन धर्म जिस तरह से दिव्य सत्ता को-परम सत्ता, वैश्विक चेतना और व्यक्तिगत चेतना-इन तीनों आयामों में देखाता है, उस दिव्यकोण को आलोचक समझ नहीं पाते; और इसकी मुख्य वजह है भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता की उनकी अमूर्त समझ।

समय के साथ इस व्यवस्था को लेकर आमजन की परेशानियाँ और शिकायतें लगातार बढ़ती जा रही हैं। अब यह केवल यातायात व्यवस्था सुधारने का माध्यम न होकर आम नागरिकों के आर्थिक शोषण और मानसिक उपीड़न का कारण बनती दिखने दे रही है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि नो पार्किंग का सरकारी चालान मात्र 200 है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि स्वयं सरकार भी इसे कोई बहुत बड़ा अपराध नहीं मानती। इसके बावजूद वाहन मालिकों से फ़ीन शुल्क के नाम पर 600 या उससे अधिक राशि वसूली जाती है। यानी वास्तविक चालान राशि से तीन गुना अधिक पैसा निजी फ़ीन से प्राप्त होता है।

नियमों के अनुसार वाहन उठाने से पहले वाहन स्वामी को लाउडस्पीकर अथवा अन्य माध्यम से सूचना देकर उचित समय देना चाहिए, ताकि वह स्वयं वाहन हटा सके।

जहाँ तक अस्पृश्यता (छुआछूट) की कुप्रथा का प्रश्न है, सभी समाज सुधारकों ने इस बात को स्वीकार किया है कि-ठीक वैसे ही जैसे कानून में कुछ मूल सिद्धांत होते हैं और कुछ नियम होते हैं-उसी तरह, अस्पृश्यता की यह कुप्रथा भी केवल नियमों में बाँध जाती है, न कि धर्म के मूल सिद्धांतों में। सभी समाज सुधारकों ने, बिना किसी अपवाद के, अस्पृश्यता की इस कुप्रथा को कड़ी निंदा की है; क्योंकि यह समाज में असमानता को बढ़ावा देती है।

वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था के बीच के अंतर को समझना अत्यंत आवश्यक है। वर्ण व्यवस्था तो व्यक्ति के कर्म और स्वभाव के आधार पर कार्यों का वर्गीकरण करती है; जबकि जाति व्यवस्था का आधार केवल जन्म होता है-और जाति व्यवस्था सनातन धर्म की मूल भावना के बिल्कुल विपरीत है। यह रेखांकित करना भी प्रासंगिक है कि हेट स्पीच (घृणापूर्ण भाषण) की अवधारणा, भाँचकर और सामाजिक लोकतंत्र के सिद्धांतों के बिल्कुल विरुद्ध है। डॉ. अंबेडकर ने 25 नवंबर 1949 को संविधान सभा में दिए गए अपने ऐतिहासिक भाषण में सामाजिक लोकतंत्र के महत्व पर विशेष जोर दिया था।

देश का कानून भारत के संविधान में निहित है। संविधान द्वारा प्रदत्त वाक्य में अतिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार निरपेक्ष नहीं है; बल्कि इस पर कुछ उचित प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। हर प्रकार की चर्चा, किसी विचार का समर्थन, अथवा आलोचना को हेट स्पीच की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने विभिन्न निर्णयों में, तथा विधि आयोग ने अपनी रिपोर्टों में, हेट स्पीच की परिभाषा के दायरे को स्पष्ट करने पर विशेष बल दिया है। इस परिभाषा के अंतर्गत-अन्य पहलुओं के साथ-साथ-दुराशय तत्कालीन परिस्थितियों, और हिंसा के लिए उत्तसाने जैसे तत्वों पर विचार किया जाता है; और इसमें कोई महत्वपूर्ण

पहलू तब होता है कि किसी आपत्तिजनक भाषण के प्रति एक विवेकशील व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया होगी? अतः यह कहा जा सकता है कि ऐसे विवेकशील व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह भारतीय संस्कृति की नींव से परिचित हो-वह संस्कृति जो वसुधैव कुटुम्बकमे के सिद्धांत में विश्वास रखती है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति में पूर्णता को प्राप्त करने की समान क्षमता निहित है। आधुनिक काल में, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद और श्रीअरविन्द के कार्यों को समझे और सराहें बिना, भारतीय संस्कृति की कोई भी साराहना अधूरी और विकृत मानी जाएगी; साथ ही, यह सनातन धर्म के साथ भी न्याय नहीं कर पाएगी।

संविधानिक न्यायालय ने स्टालिन को हेट स्पीच (नकरत फैलाने वाले भाषण) का दोषी पाया था। अब 13 मई 2026 को, वह तमिलनाडु की विधानसभा से फिर से हेट स्पीच दी है। खबरों के अनुसार, विश्व के नेता के तौर पर उन्होंने कहा है कि सनातन धर्म को समाप्त किया जाना जरूरी है। उनका अखीर चेहरा सामने आ गया है। वह एक कायर व्यक्ति है। उनमें अपने शब्दों पर कायम रहने का साहस नहीं है। संविधान के इतिहास में यह एक काला दिन था, जब हेट स्पीच फैलाने वाला व्यक्ति फिर से वहीं शरारत दोहरा रहा था, और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विश्वास ने स्टालिन के इस अत्यंत अस्वीकार्य आचरण पर कोई आपत्ति नहीं जताई। ठीक वैसे ही, जैसे अरविंद केजरीवाल ने विधानसभा में बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए, विधायकों को प्राप्त विशेषाधिकारों की आड़ ली थी। स्टालिन भी अब अरविंद केजरीवाल और ममता बनर्जी के ही नक्शेकदम पर चल रहे हैं। इसमें कोई हँरानी की बात नहीं होगी कि भविष्य में स्टालिन का हथ्र भी वैसे ही होगा।

-सूर्य प्रताप सिंह राजावत, अधिवक्ता राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर

नो पार्किंग के नाम पर आमजन का उपीड़न कब तक?



रोहित कुमार जैन

जयपुर शहर में नो पार्किंग में खड़े वाहनो को फ्रीन के माध्यम से उठाकर ले जाने की व्यवस्था कोई नहीं नहीं है। यह व्यवस्था पूर्व की सरकारों के समय से ही चली आ रही है। लेकिन